Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part -1 (Hons)
Paper -I
Indian Philosophy

2013 MAY
JUNE 2013 | JULY 2013
Week 21 Day (143-222) THURSDAY 23

वैशेषिक - दर्शन - 1. पदार्थ (द्रव्य) "Substance"

'वैशेषिक - दर्शन' के प्रवर्तक महर्षि कणाद थे। इस दर्शन में विशेष नामक पदार्थ की व्याख्या की गई है। विशेष को मानने के कारण ही इस दर्शन को वैशेषिक दर्शन कहा जाता है। कणाद का वैशेषिक सूत्र इस दर्शन का सर्वप्रथम तथा सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। 'वैशेषिक' दर्शन में पदार्थों की मीमांसा हुई है इसमें पदार्थों के अन्दर विश्व की वास्तविक वस्तुओं की चर्चा की गयी है।

वैशेषिक दर्शन भारतीय विचार-धारा में आस्तिक दर्शन कहा जाता है। इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद थे। उनके बारे में कहा जाता है कि वे अन्न-कणों को खेत से चुनकर अपने जीवन का निर्वाह करते थे। इसीलिए उनका नाम कणाद पड़ा। कणाद का असल नाम 'उलूक' था, इसी कारण वैशेषिक दर्शन को कणाद अथवा "औलूक्य" दर्शन की भी संज्ञा दी जाती है।

वैशेषिक दर्शन में सात पदार्थों की चर्चा की गई है जिसमें द्रव्य (Substance) वैशेषिक दर्शन का प्रथम पदार्थ है।

1. द्रव्य — द्रव्य वह पदार्थ है जो स्वतः गुण और कर्म से भिन्न होते हुए भी उनका आधार है। द्रव्य की अनुपस्थिति में गुण और कर्म की कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि द्रव्य से अलग उनका कोई अस्तित्व नहीं है। द्रव्य नौ प्रकार के हैं — 1. पृथ्वी 2. जल 3. अग्नि 4. वायु 5. आकाश 6. काल 7. दिक् 8. आत्मा 9. तथा मन।

इनमें प्रथम पाँच 'पंचभूत' कहे जाते हैं, क्योंकि इन सबमें एक-एक विशेष गुण पाये जाते हैं। इस प्रकार पृथ्वी में गन्ध, जल में रस, अग्नि में रूप, वायु में स्पर्श तथा आकाश में शब्द है। इन पाँचों विशेष गुणों का ज्ञान हमें जिन ज्ञानेन्द्रियों से होता है वे क्रमशः इस प्रकार हैं — नाक, जीभ, आँख,

त्वचा, तथा कान। इन ज्ञानेन्द्रिय की उत्पत्ति भूत द्रव्य से होती है जिसके विशेष गुण का ज्ञान जिस इन्द्रिय विशेष से होता है। जैसे नाक की उत्पत्ति पृथ्वी से जीभ की उत्पत्ति जल से आँख की उत्पत्ति अग्नि से त्वचा की उत्पत्ति वायु से तथा कान की उत्पत्ति आकाश द्रव्य से होती है।

पृथ्वी, जल, तेज (अग्नि) तथा वायु परमाणु रूप में नित्य तथा सावयव रूप में अनित्य होते हैं। अगर किसी कार्य-द्रव्य का हम विभाजन करते चले जायें तो क्रमशः हम ऐसे न्यूनतम अवयवों पर पहुँचेंगे जिनका विभाजन किसी भी तरह से सम्भव नहीं होगा। द्रव्य के ऐसे ही अविभाज्य न्यूनतम कण को परमाणु कहते हैं। दूसरे शब्दों में द्रव्य के सबसे छोटे टुकड़े को परमाणु कहते हैं। परमाणु का नाश नहीं हो सकता।

1. पृथ्वी — उपर्युक्त नौ द्रव्यों में पृथ्वी प्रथम द्रव्य है। पृथ्वी में रूप रस, स्पर्श और गन्ध ये चार गुण हैं। गन्ध पृथ्वी का विशेष गुण है। पृथ्वी गुणी है। इन दोनों का समवाय सम्बन्ध माना गया है।

पृथ्वी के रूपों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है — (1.) शरीर (2.) इन्द्रिय, और (3.) विषय

(1) मनुष्य, पशु, कीट, पतंग, वनस्पति आदि शरीर वर्ग में हैं।

(2) घ्राण आदि इन्द्रिय वर्ग में

(3) मृत्पिण्ड, पाषाण आदि विषय वर्ग में हैं।

पृथ्वी दो प्रकार की है —

(1) नित्य (अवयव रूपा) तथा (2) अनित्य (अवयवी रूपा)

परमाणु रूपा पृथ्वी नित्य है तथा परमाणुओं के संयोग से बनी हुई अनित्य है। अनित्य पृथ्वी भी दो प्रकार की होती है —

JUNE 2013

WK	M	T	W	T	F	S	S
22						1	2
23	3	4	5	6	7	8	9
24	10	11	12	13	14	15	16
25	17	18	19	20	21	22	23
26	24	25	26	27	28	29	30

JULY 2013

WK	M	T	W	T	F	S	S
27	1	2	3	4	5	6	7
28	8	9	10	11	12	13	14
29	15	16	17	18	19	20	21
30	22	23	24	25	26	27	28
31	29	30	31				

(1) अणु और (2) महत। जो पृथ्वी है परमाणुओं के संयोग से उत्पन्न होती है इसे द्वयणुक कहा जाता है तीन द्वयणुकों के संयोग से उत्पन्न को त्रसरेणु कहा जाता है। यह तथा इससे बड़ी समस्त महत है।

2. जल — जल में रूप, रस, स्पर्श आदि हैं, स्नेह जल का विशेष गुण है। इसके भी दो भेद हैं — (1) नित्य तथा (2) अनित्य परमाणु रूप जल का स्नेह नित्य होता है परमाणु से भिन्न जल का स्नेह अनित्य होता है। पृथ्वी की तरह जल भी परमाणु रूप से नित्य तथा कार्यरूप से अनित्य है। जल का स्वाभाविक रूप शुक्ल है, जल का स्वाभाविक रस मधुर है, स्वाभाविक स्पर्श शीतल है। नीबू के जूस आदि में जो खटास होती है वह नीबू के पार्थिव कलेवर की होती है। जल का रस मधुर है, परन्तु नीबू के पार्थिव भाग के कारण इसमें खटास आ जाती है। जल का स्पर्श शीतल है परन्तु सूर्य की किरणों तथा अग्नि कणों के कारण वह गर्म प्रतीत होता है।

3. अग्नि — अग्नि में रूप और स्पर्श दो गुण होते हैं। अग्नि का स्पर्श उष्ण तथा रूप शुक्ल है। उष्ण स्पर्श के दो भेद हैं नित्य और अनित्य। नित्य उष्ण स्पर्श नित्य तेज परमाणु में रहता है और अनित्य उष्ण स्पर्श अनित्य तेज में रहता है। अनित्य उष्ण स्पर्श जन्य उष्ण स्पर्श और नित्य जन्य तेज कहलाता है।

4. वायु — वायु स्पर्शवान है। अतः वायु की सत्ता स्पर्श से ही सिद्ध होती है। स्पर्श का आश्रय ही वायु है। यह स्पर्श पृथ्वी आदि किसी भी द्रव्य में

आश्रित नहीं हो सकता। वायु के भी नित्य तथा अनित्य दो भेद हैं। वायु भी परमाणु रूप में नित्य और कार्यरूप से अनित्य होता है।

5. आकाश — शब्द गुण के आश्रय को आकाश कहते हैं। दूसरे शब्दों में आकाश का विशेष गुण शब्द है। शब्द पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि का विशेष गुण नहीं हो सकता, अतः पारिशेष यह आकाश का ही गुण है। आकाश एक नित्य है, विभु और सर्वव्यापक है।

6. काल — काल एक स्वतन्त्र द्रव्य है। परत्व, अपरत्व, ज्येष्ठत्व, कनिष्ठत्व आदि से काल का अनुमान किया जाता है। महर्षि कणाद के अनुसार अलग-अलग कार्यों का आगे पीछे होना या एक साथ होना, देर या शीघ्रता से होना आदि काल के चिह्न हैं। काल एक है, विभु है, परम महान और आकाश के समान नित्य है। मूलतः काल एक ही है, परन्तु अनित्य पदार्थों की उत्पत्ति स्थिति और विनाश का आधार होने से भूत, भविष्य और वर्तमान तीन भागों में विभाजित किया गया है।

7. दिक — एक वस्तु दूसरी वस्तु के किस ओर है, कितनी दूर पर स्थित है, इत्यादि ज्ञान का आधार काल है, परत्व, अपरत्व से हम दिशा का अनुमान करते हैं। हम कहते हैं कि पाटलिपुत्र से प्रयाग की अपेक्षा काशी निकट है। यह पर (दूर) तथा अपर (निकट) दिशा का सूचक है। दिक एक नित्य तथा विभु है। लोक व्यवहार के लिए दिशा के चार भेद माने जाते हैं पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण। अकाश के

समान दिक् और काल भी अगोचर द्रव्य हैं।

8. आत्मा — यह नित्य और सर्वव्यापी द्रव्य है। यह चैतन्य का आधार या अधिष्ठान है। मैं सुखी हूँ, मैं जानता हूँ, इत्यादि अनुभव प्राणीमात्र को होता है, इन अनुभवों से आत्मा की सत्ता सिद्ध होती है। न्याय वैशेषिक के अनुसार ज्ञान का अधिकरण ही आत्मा है। ज्ञान, इच्छा, प्रयत्न आदि गुणों के आश्रयभूत द्रव्य को आत्मा कहते हैं तथा इसी आत्मा को जीव भी कहते हैं। जीव प्रति शरीर में भिन्न होता है, ~~[illegible]~~ क्योंकि प्रत्येक शरीर में सुख दुःख आदि अनुभवों की विचित्रता है। अतः सिद्ध है कि भिन्न शरीरों में भिन्न-भिन्न आत्मा है।

9. मन — मन आभ्यान्तरिक इन्द्रिय है जिसका कार्य है जीवात्मा के गुणों का प्रत्यक्ष करना। मन अतीन्द्रिय है, अतः इसका प्रत्यक्ष नहीं होता। मन अनुमान प्रमाण से सिद्ध होता है। मन का अस्तित्व सिद्ध करने के लिए कणाद कहते हैं कि आत्मा, इन्द्रिय और विषय इन तीनों के वर्तमान रहने पर भी ज्ञान का भाव और अभाव दोनों दिखलायी देता है। आत्मा (ज्ञाता) इन्द्रिय (करण) तथा अर्थ विषय के अत्यन्त संयोग से मन के द्वारा ही ज्ञान प्राप्त होता है। यदि तीनों का संयोग हो परन्तु मन कहीं अन्यत्र रहे तो ज्ञान प्राप्त नहीं होता है। स्मृति, सुख, दुःख आदि के अनुभव भी मन के ही द्वारा संभव हैं। अन्धे, बहरे मनुष्यों को भी स्मृति होती है। सुख-दुःख आदि का अनुभव भी बाह्य इन्द्रियों पर आधारित नहीं है। इन्हें मन की अपेक्षा है। मन के द्वारा एक काल में एक ही ज्ञान की उत्पत्ति होती है। अतः मन की सत्ता सिद्ध है।